नशे की आदत

1. करते जो दारू नशा हो जाती खराब दशा
छोड़ नहीं पाते चस्का जुगत लगाना है।

बुद्धि औ विवेक श्रेष्ठ हो जाते हैं नष्ट भ्रष्ट,
झेलता कुटुम्ब कष्ट कहीं न ठिकाना है।

मानते न कहना है जिद अड़े रहना है
पति हो या हो सपूत कैसे समझाना है।

छीन करते बर्बाद जिंदगी होते आजाद
रोता परिवार बाद बचे न खजाना है।

2. लीबर खराब होता बिन रुके दारू पीता
कहना न मानता हैं जिल्लत झिलाना है।

गोरा गोरा बदन था कलुआ मसान हुआ,
पकड़ लिया है रोग कैसे तो बचाना है।

चोरी औ चकारी करें पी पी के भिखारी बने,
नशा खातिर भाई माँ बाप बेंच खाना है।

कर्म का जो फल मिला मानव का तन खिला
आदत नशे की पाल व्यर्थ में गलाना है।

3. बिगड़ा जो लड़का है झटका दे तगड़ा है,
ठर्रे पे उड़ावें ठर्रा देख मर जाना है।

मोह ममता का दंश दे रहा हो रक्त अंश
बर्बादी करें नृशंस घुट मर जाना है।

पीने में लगे न ब्रेक करें मनमानी देख
पकड़ जो लेता रोग सड़ मर जाना है।

पैसों की जो मारामारी घर में कलह भारी,
कर्म को देख अलका जीते मर जाना है

डॉ अलका गुप्ता
प्रियदर्शिनी लखनऊ

यह मुझको मालूम नहीं

यह मुझको मालूम नहीं,
और यह बात तुम मुझसे पूछो भी मत,
क्योंकि सच तुमको भी मालूम है,
कि कल तुम सब मुझसे दूर चले जावोगे,
अगर तुम आज मेरे साथ हो तो इसी कारण,
क्योंकि आज मैं सामर्थ्यवान हूँ ,
मैं आज तुम पर अपनी दौलत लुटा रहा हूँ ,
मैं आज तुम पर अपनी खुशियां लुटा रहा हूँ ,
दिखाकर तुम्हें भविष्य का सुंदर सपना,
दम, उमंग और जोश तुझमें भर रहा हूँ , क्यों ?
यह मुझको मालूम नहीं।

जबकि यह हकीकत मुझको भी पता है,
कि गर नहीं रह सका मैं कल आज की तरह,
क्योंकि मैं जी.आज़ाद हूँ ,
गर मैं उलझ गया किसी काम में,
या तो तुम देखना नहीं चाहोगे मेरी तरफ,
या फिर निकल जावोगे बिना बात किये,
लेकिन ऐसे क्यों ?
यह मुझको मालूम नहीं।

क्यों तुमसे इतना प्रेम रखता हूँ ,
क्यों सिर्फ तुम्हारे सपनें बुनता हूँ ,
और तुम्हारे दुःख देखकर,
क्यों मैं दुःखी हो जाता हूँ ,
वह कौनसा तार है,
जो बना है एक सेतु ,
हम दोनों के बीच में,
कि मैं मानता हूँ तुमको,
अपनी खुशियां और जिंदगी,
यह मुझको मालूम नहीं।

गुरुदीन वर्मा उर्फ़ जी.आज़ाद
तहसील एवं जिला- बारां(राजस्थान)

टूटना और उसके बाद मरना

दिल टूटने पर,
आंसू भी चुप हो जाते हैं,
और दर्द भी एक खामोशी बन जाता है।÷

मोहब्बत तो बेपनाह कर बैठे है
ना जाने क्यूँ लफ्जों से बयां करना
हमें अच्छा नहीं लगता।
खामोश रहना ,
हमे अन्दर तक मार दिया है

आदमी मरने के बाद
कुछ नहीं समझता
आदमी मरने के बाद
कुछ नहीं पहचानता
आदमी मरने के बाद
कुछ नहीं बोलता
किसी शख्स का कम बोलना
ओर उसे उसके जैसा महत्व नहीं
देने पर आदमी मर जाता हैं

DALPAT KUMAWAT

एक-दूजे के प्रिय नही

प्राय- हर घर में होती है दो नारी
दोनों के दोनों गृह आधारी
पर एक समझती मजदूर
दूजे को ठेकेदारनी
अनुभवों की बाते कड़वे लगते
ज्यों आघात मारनी।
किंतु ऐसा नहीं कि वह है
एकदम सुस्त और अकर्मण्य
गृह कार्यो में चटपट बलिष्ठ
अगणित काज शीघ्र करती शून्य।
पर उसी सब कर्म को करके
दूजे बनी होती अनुभवी
जिसके वचन लगते बाण सरिस
श्रवणकर कहती शीघ्र अस्त हो रवि
कुछ होते हैं पुराने हड्डी
बाल की खाल निकालने में माहिर
बेहतरीन काजों में भी कमियाँ ढूँढ
ताने मारके सब करती जाहिर।
एक होती उत्तर तो दूसरे दक्षिण
किसी में नाराजगी दीर्घ बेला
किसी में दिखते अति क्षीण।
एक-दूजे के प्रिय नही धरा में कोई
पड़ला नाजुक दोनों धर-धर रोई।।

चन्द्रकांत खुंटे क्रांति
जांजगीर-चाम्पा (छत्तीसगढ़)

वाहिनी वर्णिक मुक्तक,

लाल देद, कश्मीरी कवि
कश्मीर की बेटी, जो यायावरी है।
जो गेह में वैरागी, आभा भरी है।
लालेश्वरी %वाखों% में आत्मा जगातीं-
सीखें धरें सूफी, माया बाहरी है।
कश्मीर की भाषा वाखों में सजातीं।
वे शैव तत्वों को बोधों में बतातीं।
सौहार्द धर्मो के,गीतों में निखारें-
अध्यात्म भावों को कालातीत पातीं।

मीरा भारती।

हिंदू नव वर्ष ,नया विक्रम सम्वत आया है।

जनमानस में सर्वत्र नया उत्साह छाया है।।
फिजा की रंगत भी बदली नजर आ रही है।
हर प्राणियों का चेहरा अधिक मुस्कराया है।।
सनातनियों का नया संवत्सर मंगलकारी हो।
नववर्ष,चैत्र शुक्ल प्रतिपदा शुभ दिन आया है।।
नव संवत्सर के राजा तथा मंत्री होंगे सूर्य देव।
अन्न,धन,खनिज,धातु के स्वामी,बुध बनाया है।।
खाद्य पदार्थों के स्वामी मंगल, वाहन हाथी है।
नव संवत्सर का शुभ नाम कालमुक्त धराया है।।
सम्राट विक्रमादित्य ने राज्य की स्थापना करी।
तब से विक्रम संवत के नाम से ख्याति पाया है।।
इस दिन श्री राम जी का राज्याभिषेक हुआ था।
चैत्र प्रतिपदा से नवरात्रि पर्व का आनंद छाया है।।
सूर्य देव की प्रधानता से,अबकी वर्षा खूब होगी।
खेतों में फसलों की पैदावार से कृषक हर्षाया है।।

रामसेवक गुप्ता
मकराना
राजस्थान

माँ काली स्तुति

इतनी शक्ति देना माता
फिर से खड़ा साम्राज्य हो
हर कोई जिए , हर कोई हसें
न्याय धर्म का राज्य हो ।
मिट जाए अन्याय दुनिया से
फिर से न्याय आवाद हो
हर कोई जिए ,हर कोई हसें
न्याय धर्म का राज्य हो ।
अमीर ,गरीब को मार रहा
अन्याय,न्याय को खा रहा
अधर में फसी है जीवन
फिर से अधर्म सिर को उठा रहा
हे महिषासुरमर्दनी फिर से
अधर्म पर धर्म का राज्य हो
हर कोई जिए ,हर कोई हसे
न्याय धर्म का राज्य हो ।
तूने कुंभ ,निशुंभ को मारा
ताकि धर्म आजाद रहे
युगों -युगों तक धरती पर
धर्म का राज्य आवाद रहे ।
लोकतंत्र की आड़ लिए
यहां पापी राज्य चला रहे
राजधर्म का विशेषज्ञ बन
अपराधी मौज उड़ा रहे !
पापियों की अब अर्थी उठे
इतना अधर्म बरबाद हो

हर कोई जिए, हर कोई हसें
न्याय धर्म का राज्य हो ।
इतनी शक्ति देना माता
फिर से खड़ा साम्राज्य हो।

नवेंदु कुमार
वर्मा,गया बिहार
6207928137

हाइकु

1)मां की कोख में
जैसे बीहड़ छाँव
मिलते सुख

2)आराम होता
फैली काली चादर
घौंसले बीच

3)एक दीप है
कमरा भरता है
खुद को बाल

4)माता की कोख
एक तीर्थ अस्थाई
कर लो पूजा

5)देख पेड़ को
धूप छाँव में खड़े
कुछ ना मांगे

कश्मीरी
लाल चावला
अदबी
माला मुकतसर भारत

अपने ही वादों से मुकर जाता है

अपनी आग में जल जल के मैं
बिखर जाता हूं।
याद कर कर के वो लम्हे मैं तो
पिघल जाता हूं।

रूबरू होगा वह तो मैं कैसे
करूंगा बातें उससे।
हसीं की काली ज़ुल्फों में मैं तो
उलझ जाता हूं।

ना मुमकिन नशा आंखों का
बोतल में छुपा के रखना।
और वो कमबख्त अपने ही
वादों से मुकर जाता है।

मान लेते हैं की जन्नत में होगा
हसीन हूरों का हुजूम।
किसे मालूम है जन्नत,और
कौन दोज़ख में चला जाता है।
तेरे हुस्न की जलवा गिरी कुछ

इस तरह है तारी मुझ पर ।
आंखों से तेरी पीकर सच मेरा
ईमान चला जाता है।
मुहब्बत में कुछ इस तरह से

बिगाड़ा है उसने मुझे मुश्ताक़।
वक्त सुबह और शाम का बस
मेरा यूं ही बेकार चला जाता है।

डॉ.
मुश्ताक़
अहमद
अहमद
शाह
सहज़
हरदा मध्य प्रदेश

हे नारी, तुम सृष्टि का संचारण तुम ही सर्वेश्वरी हो।

तुम ही उमा,रमा ब्रह्मणी,तुम ही
परमेश्वरी हो।।

जन कल्याण के लिए तुम सदा
तत्पर रहती हो।

नहीं हो पीछे तुम सदैव अग्रसर
रहती हो।।

विश्व की चिंता का है चिंतन
जी हाँ तुम ही विश्वेस्वरी हो -

तुम ही उमा,रमा ब्रह्मणी,तुम ही
परमेश्वरी हो

देवियों का है अंश तुम्हारे ही
अंदर।

विध का विधान करुणा का
अथाह समंदर।।

तुम्हारी क्षत्रछाया में ये जहाँ
तुम ही क्षत्रेस्वरी------

तुम ही उमा,रमा ब्रह्मणी,तुम ही
परमेश्वरी हो।।

ये मानव का जीवन एक रैन
बसेरा है।
माया में भूलकर करता तेरा मेरा
है।।
बस यूं तुम करो कृपा की कोर
तुम ही मुक्तेश्वरी हो----
तुम ही उमा,रमा ब्रह्मणी,तुम ही
परमेश्वरी हो।।

- अनिल प्रजापति
-सिमथरा
भांडेर दतिया मप्र

गनिका और शास्वी का जन्मदिन

गनिका और शास्वी
आप दोनों को
आपके जन्म दिनकी
पर बधाई हो द्यद्य

आपके जीवन का
हर एक लम्हा सुखदाई हो
बेटी के रूप में तुम
लक्ष्मी बन कर आई हो द्यद्य

मां बाप को प्यारी हो
तुम खूब दुलारी हो
बड़ी खूब सूरत हो
तुम राज कुमारी हो द्यद्य

कुल खानदान का मान बढ़ाना
कुछ ऐसा करके दिखलाना
धर्म के मार्ग पर चलना
ऐसा बन कर दिखलाना द्यद्य

मां-बाप की होती
दुलारी बेटियां
बेटों से बढ़कर
मां-बाप को प्यारी बेटियां

डरते हैं जहां में लोग
बेटी पैदा करने से
ऐसे लोगों को तुम
कुछ सबक सिखानाद्यद्य

लड़कियां लड़कों से
जरा भी कम नहीं है
लड़कियों को हरा दे
लड़कों में दम नहीं है द्यद्य

जन्मदिन दिवस की
खूब-खूब बधाई हो
आने वाला हर लम्हा
आपके जीवन में सुखदाई हो द्यद्य

अशोक कुमार
उत्तर प्रदेश
म.प्र.

सब लहरे तुम्हारी है

सारा आसमान है तेरा, सारे पंख तुम्हारे है
जो उड़ना सीखा है, उड़ान भी तुम्हारी है
साँसे चलती तुमसे, ये हवा तुम्हारी है
शक्ति पर दंभ नही, ताकत तुम्हारी है
अँधेरा तुम्हारा है, उजाला भी तुम कर दो
नही रहना ऊँचाई पर, मुझे धरती में रहने दो।
सारी नींद तुम्हारी, मुझे सपनों में खोने दो
दौलत तिजोरी की, अमीरी की निशानी है
मुझे फकीरी में सही, तेरे करीब रखने दो
किताबों में भरी बातें, जीना सिखाती है
सीख सदा उसकी, मस्त हर हाल में रहने दो।
देख अटारी की चमक, मन छूने का करता है
इस कल्पना में, कुछ सुकुन भी होता है?
पक्के मकान सब तुम्हारे, तुम्हारी धन-दौलत
सुकून भरी छांव में, मुझे झोपड़ी में रहने दो
पँछी सा मन मेरा, चहल उड़ने को करता है
पंख फैला अपने, आसमान छूने को करता है।
आसमान मुबारक तुम्हे, सारा गगन तुम्हारा है
धरती पर जन्मा हूँ धरती पर ही जीना है
खुशबू मेरे मिट्टी की माँ की गोद सी लगती है
सर रखकर गोद में, मन सोने का करता है
समुंदर सब तेरे, सब लहरे तुम्हारी है
एक तट पर बैठा मैं, एक-एक बूँद प्यारी है।

श्याम कुमार
कोलारे
चारगांव
प्रहलाद, छिन्दवाड़ा
(मध्यप्रदेश)
मो. 9893573770

परिवार

परिवार प्रेम की मूरत है,
संग चले तो दुनिया सूरत है।
माँ की ममता, पिता का साया,
भाई-बहन का संग सुहाया।
जहाँ हर दिल में प्यार बसता,
हर आंगन में सुख भी हँसता।
दुख में हिम्मत, सुख में गाना,
साथ निभाए हर इक बहाना।
संस्कारों की पहली कड़ी,
हर रिश्ता इसमें गहरी जड़ी।
जो साथ रहे, वो घर कहलाए,
जहाँ अपनापन मुस्कुराए।

परिवार से दुनिया प्यारी,
इससे जीवन की हर तैयारी।
जहाँ मिले अपनापन सारा,
वहीं बसे खुशियों का किनारा।

अनोप भाम्बु
जोधपुर

ईद

खुशी का दिन कहूं या त्योहार,
इसकी सोहबत में,
खुशियां मिलती है खूब अपार।
प्रेम भाइचारे और सामूहिक खुशी का प्रतीक है,
ज्ञान दर्पण में,
सबसे खूबसूरत त्योहारों में,
यही जिंदगी का,
एक हकीकत है,
कह सकते हैं हम-सब के संदीप हैं।
मदद करने की परम्परा का,
सबसे खूबसूरत उपहार है।
ज्ञान दर्पण में उम्मीद बनाएं रखने वाले लोगों को,
यही जिंदगी है,
सबसे बड़ा आभार है।
प्रेम भाइचारे और सुकून देने वाली ताकत बनकर,
इसकी अहमियत को लेकर,
बड़ी नजदिकियां लाती है।
सहर्ष स्वीकार कर एक सुखद अहसास दिलाने में,
सबको करीब लाने की ताकत देते हुए,
हमेशा आगे बढ़ने में,
इन्सानियत की कोशिश कर,
हर्षित मन को तसल्ली देती है।
सारा सच है तो दुनिया में,
ईद मुबारक एक सुखद अहसास दिलाने वाली ताकत है।
सहर्ष स्वीकार किया जा सकता है,
यही इस त्योहार का,
सबसे बड़ा प्यार है।
ईद मुबारक को साकार करने में,
गरीब -अमीर धरती की जरूरत है।
इसकी वजह से ही,
इसकी बढ़ रही अहमियत है।
सारा सच एक साहित्यिक विधा की उन्नत खोज है,
इसकी वजह से ही,
दुनिया एक सुखद अनुभव का संकल्प है,
हम कह सकते हैं,
यही अफरोज है।

डॉ अशोक,
पटना, बिहार

भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा

गायत्री शक्तिपीठ हरिद्वार द्वारा,
यह परीक्षा संपूर्ण भारत में कराई।
विद्यार्थियों ने नैतिक मूल्यों संग,
भारतीय संस्कृति की शिक्षा पाई।।
सभी विद्यार्थियों ने मन लगाकर,
भा.सं.ज्ञान परीक्षा की करी पढ़ाई।
परीक्षा की सभी शिक्षक बंधुओ ने,
अपने विद्यालय में तैयारी करवाई।।
सर्वप्रथम इन नन्हे-मुन्ने बच्चों को,
ओएमआर शीट भरना सिखाई।
अतिरिक्त कालांश ले शिक्षकों ने,
मिली हुई किताबें खूब पढ़ाई।।
परीक्षा में लगे स्वयंसेवकों की,
देखो मेहनत उनकी रंग लाई।
राज्य,जिला,विकासखंड स्तरीय,
अलग-अलग मेरिट सूची बनाई।।
परीक्षा संचालक सलोकिया जी ने,
सूचियां सब ही प्रकाशित करवाई।
शाजापुर-आगर की संयुक्त मेरिट में,
अट्ठाईस विद्यार्थियों ने जगह बनाई।।
सीएम राइज विद्यालय सुसनेर की,
प्रतिक्षा पंवार कक्षा6 में प्रथम आई।
मेरिट सूचियों में स्थान बनाने वाले,
विद्यार्थियों को बहुत-बहुत बधाई।।

शिवलाल
दांगी,अध्यापक
सीएम
राइज शा.उ.उ.मा.विद्यालय,
सुसनेर जिला आगर
मालवा

चल फिर मिलते है

दो दोस्त,
एक साथ पढ़ाई,
एक साथ शैक्षणिक प्रगति,
एक सामान्य,
एक में महत्वाकांक्षा अति,
हुई पढ़ाई पूरी,
पर जिंदगी की असल परीक्षा अधूरी,
एक जल्द कुछ करना चाहता था,
एक सोच समझ आगे बढ़ना चाहता था,
पहले ने किसी और की
दरी उठाना शुरू किया,
कालांतर में बड़े नेता का
महत्वपूर्ण पद हासिल किया,
दूसरे ने रात दिन
अलख जगाना शुरू किया,
खुद को समाज और मिशन को सौंप दिया,
पहले वाले की एक आवाज पर
सैंकड़ों लोग इकट्ठे होते थे,
जिनके सपने उनके पीछे पूरे होते थे,
दूसरा इकट्ठा होने का आह्वान
कभी नहीं करते थे,
जागृति फैला दूसरों को जगाते
और खुद भी संवरते थे,
जब दोनों मिलने पहुंचे तो
दृश्य अद्भुत था,
पहला बेरोकटोक कहीं भी जाता था,
दूसरा समस्या देख
उसे दूर करने रुक जाता था,
आप ही बताओ कौन कामयाब है,
एक सत्ता का दबंग
दूसरा जन जन की आवाज है।

राजेन्द्र लाहिरी
पामगढ़ छग

चाय तुम और मैं

थोड़ी देर रुकने का बहाना बना लेना।
मैं ना-ना कहते रहूँगा, तुम चाय बना लेना।
बातों की मिठास में घुल जाएगी हर घूँट
सपनों के इस जहाँ में, हकीकत जाएगी छूट।
मेरे पास आकर बैठो, मैं तुम्हें किस्से सुनाऊ
खिड़?की से झांकते चांद को बुलाऊँ ।
नजरो में मेरी देखो, ये लम्हा ठहर जाए
कुछ पुरानी यादें फिर से नजर आए।
ये लम्हे जो ठहरे तो जादू सा होगा
दिलों के समुंदर में, साहिल सा होगा।
चाय की चुस्की में, हँसी का था जादू
बातों में ऐसे उलझे, मानो समय हो गया बेकाबू
अब कल से फिर भागेंगे, फिर वही दौड़ होगी
फिर वही किस्से, फिर वही भीड़ होगी।
इस पल में थोड़ा सुकुन चुरा लेना,
मैं ना-ना कहते रहूंगा, तुम चाय बना लेना ।।

आशीष साहू
पावर
ग्रिड,इंदौर

नव संवत्सर पर कहती है प्रकृति

नव संवत्सर विक्रम संवत नया आग़ाज़,
नई ऊर्जा, नव संकल्प, नई उम्मीद और नया है साल।
आंग्ल नववर्ष की तरह प्रण लें और करें प्रकृति संरक्षण
ताकि रह न जाए भावी पीढ़ी के लिए कोई मलाल।।
नये साल की ख़ास सुबह लाती है रेज़लूशन
के साथ उम्मीदें भरी मिठास।
प्रकृति संरक्षण हेतु प्रेरित करती हुई कहती है
ओस से आच्छादित घास।।
वनों की कटाई और ग्लोबल वार्मिंग ने बना दिया है
दुर्विषय प्रकृति को ज़िन्दा लाश।
प्रकृति को संरक्षित करना होगा, नहीं तो हो जाएगा
पृथ्वी पर जीवन का सत्यानाश।।
कहती है प्रकृति पर्यावरण में संतुलन स्थापित करो
तभी कृत्रिम नहीं, प्राकृतिक झरना होगा।
हे मानव! प्रदूषण पर नियंत्रण हेतु तुम्हें प्राकृतिक
चीजों को स्वस्थान स्थापित करना होगा।।
प्रकृति का सानिध्य स्वच्छता की निधि से
युक्त हो जैसे पक्षी धनेश।
सिर्फ़ किताबों में सिमट रहा है पर्यावरण संरक्षण
का हितकारी संदेश।।
औद्योगिकीकरण की आँधी में जीवों के विलुप्त होने
के खतरे से बदल रहा है परिवेश।
औद्योगिकीकरण को बढ़ावा देकर सत्ताधीश कर रहे हैं
प्रकृति संरक्षण हेतु नाममात्र का निवेश।।
इस नये साल पर प्रफुल्लित मन से हम सभी मिलकर लें
माँ प्रकृति को बचाने का दृढ़ संकल्प।
प्रकृति संरक्षण हमारा धर्म और कर्म हो क्योंकि
प्राकृतिक चीजें ही हैं स्वास्थ्य हेतु सही विकल्प।।

– देवनंद यादव 'देव स्नेहिल' सीधी (मज़्प्रज़्)
9770367749 (9770367749)

-मन की डायरी में

मेरी हर सुबह की होती है तुम से शुरुआत।
एक तुम्हीं तो जानते हो मेरे मन की बात।।
तुम से ही रंगीन होती है मेरी हरएक शाम।
मन की डायरी में लिखा है तुम्हारा नाम।।
आसान कर देते हो, मेरा मुश्किल सफ़र।
नहीं रहती मुझे अब किसी बात की फिकर।।
मेरी बिगड़ी बनाते हो तुम ही सारे काम।
मन की डायरी में लिखा है तुम्हारा नाम।।
थाम लिया है मैंने अब जो हाथ तेरा।
आयेगा मेरे जीवन में भी नया सवेरा।।
परवाह नहीं अब चाहे जो हो अंजाम।
मन की डायरी में लिखा है तुम्हारा नाम।।
जीवन की हर वो आखिरी पड़ाव तक।
पथरीले रास्ते से लेकर हर वो ठहराव तक।।
चलते रहना है अब, होना नही है विराम।
मन की डायरी में लिखा है तुम्हारा नाम।।
अपने दिल का हर पन्ना खोल दिया है।
जो मन में था कायनात वो सब बोल दिया है।।
अब डर नहीं, चाहे दुश्मन हो जाये आवाम।
मन की डायरी में लिखा है तुम्हारा नाम।।

नियति साहू
कायनात
बी एस सी
एग्रीकल्चर
(प्रथम वर्ष)
कृषि
महाविद्यालय
एवं अनुसंधान
केंद्र कुरूद
जिला धमतरी
छग

वो पुरुष ही है।

वो पुरुष ही है जिसने साथ निभाया जन्म से मरन तक
वो पुरुष ही है जो साथ चला ठिठुरन से जलन तक।।
वो खुल कर ना हंसा ना रोया अब्र से कब्र तक
खुद को संभाल कर रखा जब्र से सब्र तक।।
चलता ही रहा वह सवेरे से रात तक
थका नहीं कभी चलती उखड़ती सांस तक।।
खुद को संभाले रखा घटते-बढ़ते रक्तचाप तक
माथे का पसीना पोंछते और देह को मरोड़ते ताप तक।।
किरदार को निभाया खूब नींद से लेकर जाग तक
रहा सदैव मर्यादा में हंसी और ऊंचे विलाप तक।।
असफलता पर कटी नाक तक
और सफलता पर रोती आंख तक।।
हर अवसर पर जन्म दिन से ब्याह तक
खुद से जुड़े सारे रिश्तों के निबाह तक।।
सहज सरल स्वभाव से लेकर अक्खड़ तक
धुंए से लेकर उड़ते धूल धक्कड़ तक।।
घर के काम लेकर दफ्तर तक
उम्र पांच से लेकर पच्चहत्तर तक।।
हर रिश्ते को दिल से निभाया
कभी किसी को नहीं अपना दुख बतलाया।।
टूटे दिल के साथ भी मुस्कुराया
खुद के लिए और परिवार के लिए कमाया।।
खुद भूखे पेट रहकर भी वो परिवार को भूखा न सुलाया
परिवार को भरपेट खिलाया फिर खुद खाया।।
और कितना करूं उस पुरुष का बखान
जो सब कुछ सहता है बनकर एक अंजान।।

आशीष तिवारी निर्मल लालगांव रीवा मध्य प्रदेश